



# Gourav Dhar

25 Jul 2001

12:10 PM

Siliguri

Model: Web-MyKundli

Order No: 121088201

## शुद्धभाषण

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

লিঙ্গ \_\_\_\_\_: পুরুষ  
জন্ম তারিখ \_\_\_\_\_: **25/07/2001**  
দিন \_\_\_\_\_: বুধবার  
জন্ম সময় \_\_\_\_\_: **12:10:00** ঘন্টা  
ইন্ট \_\_\_\_\_: 18:01:34 ঘটা  
স্থান \_\_\_\_\_: **Siliguri**  
রাজ্য \_\_\_\_\_: West Bengal  
দেশ \_\_\_\_\_: India

অক্ষাংশ \_\_\_\_\_: 26:42:00 উত্তর  
রেখাংশ \_\_\_\_\_: 88:26:00 পূর্ব  
মধ্য রেখাংশ \_\_\_\_\_: 82:30:00 পূর্ব  
স্থানীয় সংস্কার \_\_\_\_\_: 00:23:44 ঘন্টা  
গ্রীষ্ম সংস্কার \_\_\_\_\_: 00:00:00 ঘন্টা  
স্থানীয় সময় শোধন \_\_\_\_\_: 12:33:44 ঘন্টা  
বেলাান্তর \_\_\_\_\_: -00:06:30 ঘন্টা  
সাম্পাতিক কাল \_\_\_\_\_: 08:45:55 ঘন্টা  
সূর্যোদয় \_\_\_\_\_: 04:57:22 ঘন্টা  
সূর্যাস্ত \_\_\_\_\_: 18:27:45 ঘন্টা  
দিনমান \_\_\_\_\_: 13:30:24 ঘন্টা  
সূর্য স্থিতি -অয়ন \_\_\_\_\_: দক্ষিণায়ন  
সূর্য স্থিতি -গোল \_\_\_\_\_: উত্তর  
ঋতু \_\_\_\_\_: বর্ষা  
সূর্য ডিগ্রী \_\_\_\_\_: 08:31:23 কর্কট  
লগ্ন ডিগ্রী \_\_\_\_\_: 12:51:31 তুলা

#### অবকহড়া চক্র

লগ্ন-লগ্নাধিপতি \_\_\_\_\_: তুলা - শুক্র  
রাশি-স্বামী \_\_\_\_\_: কন্যা - বুধ  
নক্ষত্র-চরণ \_\_\_\_\_: হস্তা - 1  
নক্ষত্র-স্বামী \_\_\_\_\_: চন্দ্র  
যোগ \_\_\_\_\_: শিব  
করণ \_\_\_\_\_: কৌলব  
গণ \_\_\_\_\_: দেব  
যোনি \_\_\_\_\_: মহিষ  
নাড়ী \_\_\_\_\_: আদ্য  
বর্ণ \_\_\_\_\_: বৈশ্য  
বশ্য \_\_\_\_\_: মানব  
বর্গ \_\_\_\_\_: মূষক  
যুগ \_\_\_\_\_: মধ্য  
হংসক \_\_\_\_\_: বায়ু  
জন্ম নামাক্ষর \_\_\_\_\_: পূ-পুরুষোত্তম  
পায়া/রাশি-নক্ষত্র \_\_\_\_\_: লৌহ - রৌপ্য  
সূর্য রাশি-পাশ্চাত্য \_\_\_\_\_: সিংহ

# পঞ্জিকা

পিতামহের নাম \_\_\_\_\_ :  
বাবার নাম \_\_\_\_\_ :  
মায়ের নাম \_\_\_\_\_ :  
জাতি \_\_\_\_\_ :  
গোত্র \_\_\_\_\_ :

ক্যালেন্ডার	বর্ষ	মাস	তিথি/প্রবিন্দ
রাষ্ট্রীয়	শক : 1923	শ্রাবণ	3
পাঞ্জাবী	সম্বৎ : 2058	শ্রাবণ	10
বাংলা	সন্ : 1408	শ্রাবণ	9
তামিল	সম্বৎ : 2058	অদী	10
কেরালা	কোল্লম : 1176	কর্কটিকা	9
নেপালী	সম্বৎ : 2058	শ্রাবণ	10
চৈত্রাদি	সম্বৎ : 2058	শ্রাবণ	শুক্ল 5
কার্তিকাদি	সম্বৎ : 2058	শ্রাবণ	শুক্ল 5

## পঞ্জিকা

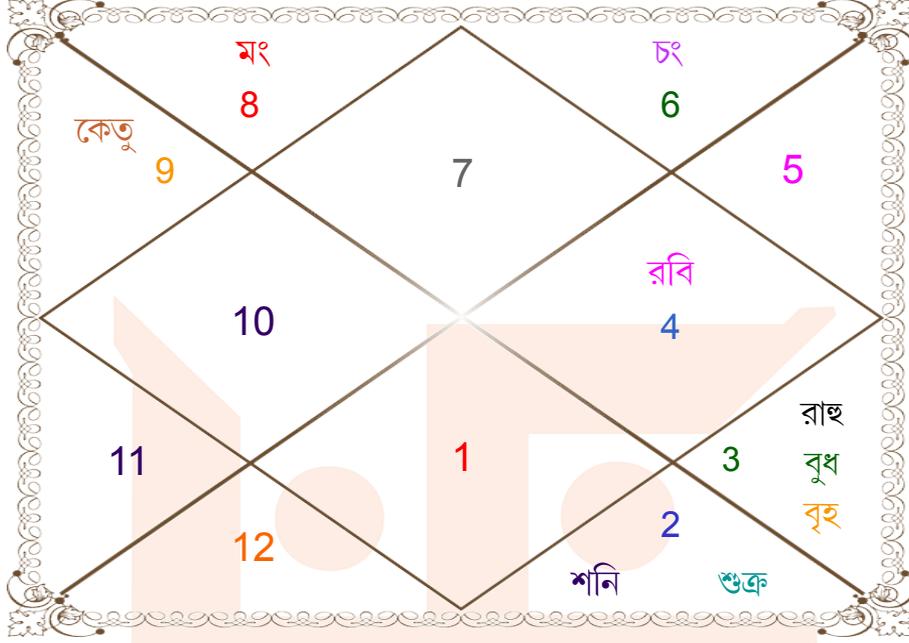
সূর্যোদয় কালীন তিথি \_\_\_\_\_ : 5  
তিথির সমাপ্তিকালীন \_\_\_\_\_ : 08:21:22  
জন্ম তিথি \_\_\_\_\_ : 6  
সূর্যোদয় কালীন নক্ষত্র \_\_\_\_\_ : উ ফালগুণী  
নক্ষত্র সমাপ্ত কাল \_\_\_\_\_ : 11:04:04 ঘন্টা  
জন্মকালীন যোগ \_\_\_\_\_ : হস্তা  
সূর্যোদয় কালীন যোগ \_\_\_\_\_ : শিব  
যোগ সমাপ্ত কাল \_\_\_\_\_ : 23:57:26 ঘন্টা  
জন্মকালীন যোগ \_\_\_\_\_ : শিব  
সূর্যোদয় কালীন করণ \_\_\_\_\_ : বালব  
করণ সমাপ্ত কাল \_\_\_\_\_ : 08:21:22 ঘন্টা  
জন্মকালীন করণ \_\_\_\_\_ : কৌলব  
ভয়ৎ \_\_\_\_\_ : 02:44:48  
ভাবক \_\_\_\_\_ : 56:17:52  
ভোগ্য দশা \_\_\_\_\_ : চং 9 ব 6 মা 2 দি

## ঘাত চক্র

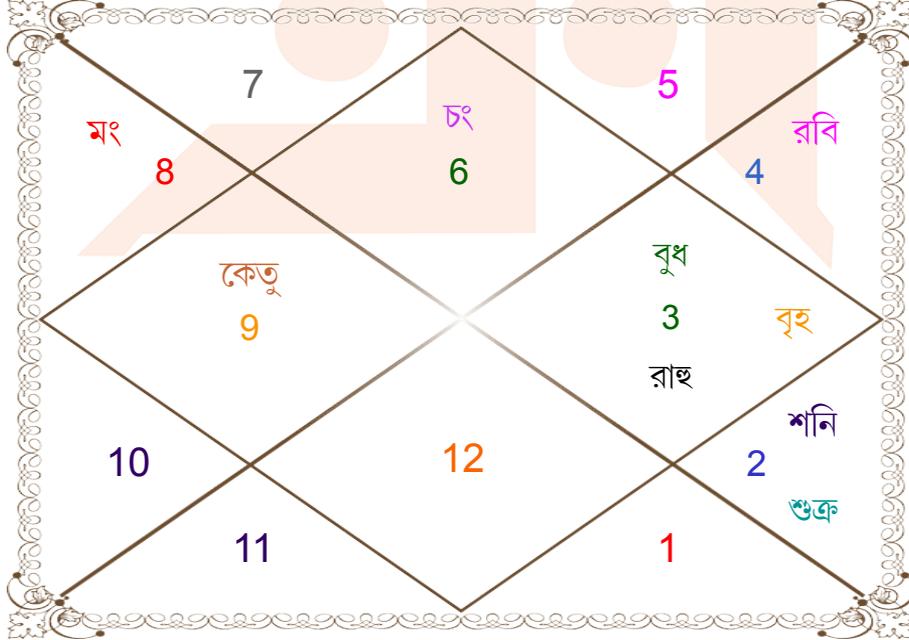
মাস \_\_\_\_\_ : ভাদ্র  
তিথি \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
দিন \_\_\_\_\_ : শনিবার  
নক্ষত্র \_\_\_\_\_ : শ্রবণা  
যোগ \_\_\_\_\_ : শুক্ল  
করণ \_\_\_\_\_ : কৌলব  
প্রহর \_\_\_\_\_ : 1  
বর্গ \_\_\_\_\_ : মার্জার  
লগ্ন \_\_\_\_\_ : মীন  
সূর্য \_\_\_\_\_ : মেঘ  
চন্দ্র \_\_\_\_\_ : মিথুন  
মঙ্গল \_\_\_\_\_ : বৃষ  
বুধ \_\_\_\_\_ : মীন  
বৃহস্পতি \_\_\_\_\_ : মিথুন  
শুক্ল \_\_\_\_\_ : কর্কট  
শনি \_\_\_\_\_ : মীন  
রাহু \_\_\_\_\_ : সিংহ

# জন্ম কুণ্ডলী

## নগ্ন কুণ্ডলী



## চন্দ্র কুণ্ডলী



# লগ্ন কুন্ডলী ঔর দশা

## লগ্ন কুন্ডলী

		শনি শুক্র	রাহু বুধ বৃহ
			রবি
কেতু	মং	লং	চং

## লগ্ন কুন্ডলী

শনি শুক্র		
রাহু বৃহ	বুধ	
	রবি	
		কেতু
চং	লং	মং

বিংশোত্তরী  
চন্দ্র 9ব 6মা 2দি  
চন্দ্র

25/07/2001

27/01/2121

চন্দ্র	26/01/2011
মঙ্গল	26/01/2018
রাহু	26/01/2036
বৃহস্পতি	26/01/2052
শনি	26/01/2071
বুধ	26/01/2088
কেতু	26/01/2095
শুক্র	27/01/2115
রবি	27/01/2121

য়োগিনী

সঙ্কটা 7ব 7মা 7দি

উলকা

02/03/2024

03/03/2030

উলকা	03/03/2025
সিদ্ধা	03/05/2026
সঙ্কটা	02/09/2027
মঙ্গলা	02/11/2027
পিস্তলা	02/03/2028
ধান্যা	01/09/2028
ভামরী	03/05/2029
ভদ্রিকা	03/03/2030

## গ্রহের ডিগ্রী এবং তার অবস্থান

গ্রহ	ব	অ	রাশি	ডিগ্রী	গতি	নক্ষত্র	পদ	সংখ্যা	রা	ন	অ.	স্থিতি
লং			তুলা	12:51:31	314:09:46	স্বাভী	2	15	শুক্র	রাহু	বুধ	---
রবি			কর্ক	08:31:23	00:57:20	পুষ্যা	2	8	চং	শনি	শুক্র	মিত্ররাশি
চং			কন্যা	10:39:31	14:22:32	হস্তা	1	13	বুধ	চং	চং	মিত্ররাশি
মং			বৃশ্চি	21:26:03	00:04:29	জ্যেষ্ঠা	2	18	মং	বুধ	শুক্র	স্বরাশি
বুধ			মিথু	25:42:49	01:56:21	পুনর্বসু	2	7	বুধ	বৃহ	বুধ	স্বরাশি
বৃহ			মিথু	08:48:17	00:12:49	আর্দ্রা	1	6	বুধ	রাহু	বৃহ	শত্রুরাশি
শুক্র			বৃষ	27:52:30	01:08:00	মৃগশিরা	2	5	শুক্র	মং	বৃহ	স্বরাশি
শনি			বৃষ	17:42:31	00:05:51	রোহিণী	3	4	শুক্র	চং	শনি	মিত্ররাশি
রাহু	ব		মিথু	12:13:41	00:02:19	আর্দ্রা	2	6	বুধ	রাহু	শনি	উচচস্থ
কেতু	ব		ধনু	12:13:41	00:02:19	মুলা	4	19	বৃহ	কেতু	বুধ	উচচস্থ
ইউ	ব		মক	29:48:36	00:02:10	ধনিষ্ঠা	2	23	শনি	মং	শনি	---
নেপ	ব		মক	13:38:52	00:01:37	শ্রবণা	2	22	শনি	চং	রাহু	---
প্লু	ব		বৃশ্চি	18:53:25	00:00:53	জ্যেষ্ঠা	1	18	মং	বুধ	কেতু	---
দশম ভাব			কর্ক	15:10:05	--	পুষ্যা	--	8	চং	শনি	বৃহ	--

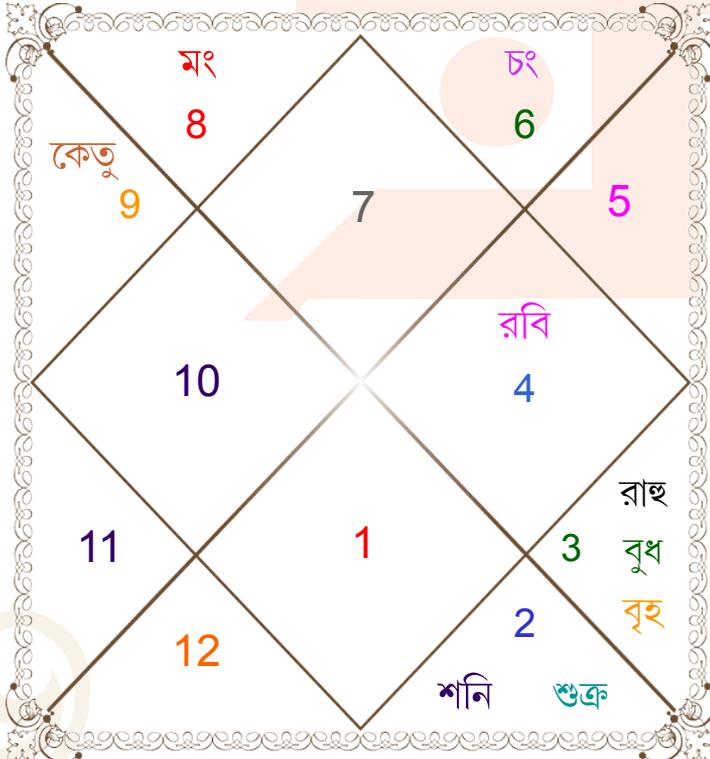
ব - বক্রী স - স্থির

অ - অস্ত পূ - পূর্ণ অস্ত

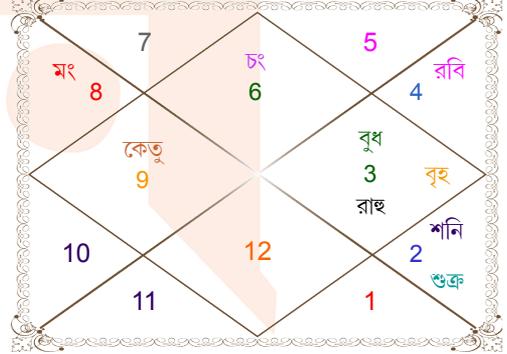
রাহু : স্পর্শ

লাহিড়ী অয়নাংশ : 23:52:28

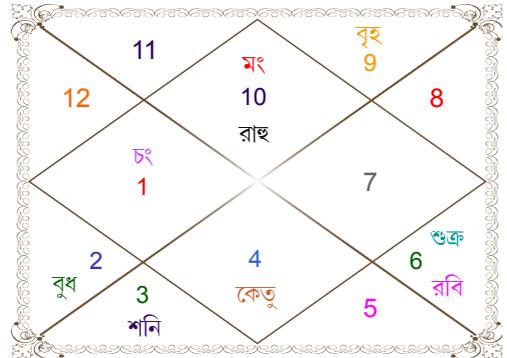
### লগ্ন চলিত



### চন্দ্র কুন্ডলী



### নবাংশ কুন্ডলী



# চলিত এবং নিরয়ন ভাব চলিত

## চলিত ডিগ্রী

ভাব	ভাব সঙ্খি	ভাব মধ্য
1	কন্যা 28:14:37	তুলা 12:51:31
2	তুলা 28:14:37	বৃশ্চিক 13:37:42
3	বৃশ্চিক 29:00:48	ধনু 14:23:54
4	ধনু 29:46:59	মকর 15:10:05
5	মকর 29:46:59	কুম্ভ 14:23:54
6	কুম্ভ 29:00:48	মীন 13:37:42
7	মীন 28:14:37	মেঘ 12:51:31
8	মেঘ 28:14:37	বৃষ 13:37:42
9	বৃষ 29:00:48	মিথুন 14:23:54
10	মিথুন 29:46:59	কর্কট 15:10:05
11	কর্কট 29:46:59	সিংহ 14:23:54
12	সিংহ 29:00:48	কন্যা 13:37:42

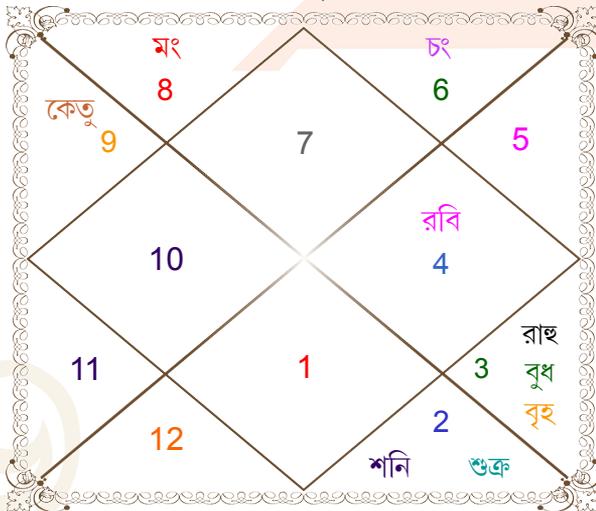
## নিরয়ন ভাব চলিত

ভাব	রাশি	ডিগ্রী
1	তুলা	12:51:31
2	বৃশ্চিক	11:57:53
3	ধনু	12:50:23
4	মকর	15:10:05
5	কুম্ভ	17:23:21
6	মীন	17:01:55
7	মেঘ	12:51:31
8	বৃষ	11:57:53
9	মিথুন	12:50:23
10	কর্কট	15:10:05
11	সিংহ	17:23:21
12	কন্যা	17:01:55

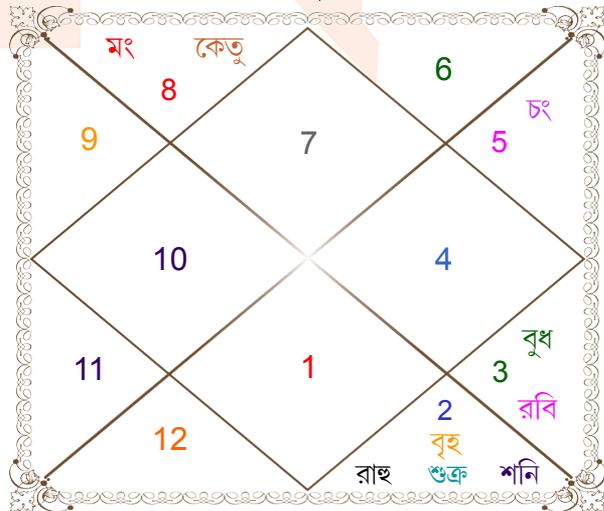
## তারা চক্র

জন্ম	সম্পত	বিপত	ক্ষেম	প্রত্যারি	সাধক	বধ	মিত্র	অতিমিত্র
হস্তা	চিত্রা	স্বাতি	বিশাখা	অনুরাধা	জ্যেষ্ঠা	মূলা	পূর্বাষাঢ়া	উত্তরাষাঢ়া
শ্রবণা	ধনিষ্ঠা	শতভিষা	পূ ভাদ্রপদ	উ ভাদ্রপদ	রেবতী	অশ্বিনী	ভরণী	কৃত্তিকা
রোহিণী	মৃগশিরা	আর্দ্রা	পুনর্বসু	পুয্যা	অশ্লেষা	মঘা	পূ ফাল্গুনী	উ ফাল্গুনী

## চলিত কুন্ডলী



## ভাব কুন্ডলী



# বিংশোত্তরী দশা

ভোগ্য দশা : চন্দ্র 9 বর্ষ 6 মাস 2 দিন

চং 10 বর্ষ		মং 7 বর্ষ		রাহু 18 বর্ষ		বৃহ 16 বর্ষ		শনি 19 বর্ষ	
<b>25/07/2001</b>		<b>26/01/2011</b>		<b>26/01/2018</b>		<b>26/01/2036</b>		<b>26/01/2052</b>	
<b>26/01/2011</b>		<b>26/01/2018</b>		<b>26/01/2036</b>		<b>26/01/2052</b>		<b>26/01/2071</b>	
চং	26/11/2001	মং	24/06/2011	রাহু	08/10/2020	বৃহ	16/03/2038	শনি	29/01/2055
মং	27/06/2002	রাহু	12/07/2012	বৃহ	04/03/2023	শনি	26/09/2040	বুধ	08/10/2057
রাহু	27/12/2003	বৃহ	18/06/2013	শনি	08/01/2026	বুধ	02/01/2043	কেতু	17/11/2058
বৃহ	27/04/2005	শনি	27/07/2014	বুধ	27/07/2028	কেতু	09/12/2043	শুক্র	17/01/2062
শনি	26/11/2006	বুধ	25/07/2015	কেতু	14/08/2029	শুক্র	09/08/2046	রবি	30/12/2062
বুধ	27/04/2008	কেতু	21/12/2015	শুক্র	14/08/2032	রবি	28/05/2047	চং	30/07/2064
কেতু	26/11/2008	শুক্র	19/02/2017	রবি	09/07/2033	চং	26/09/2048	মং	08/09/2065
শুক্র	27/07/2010	রবি	27/06/2017	চং	08/01/2035	মং	02/09/2049	রাহু	15/07/2068
রবি	26/01/2011	চং	26/01/2018	মং	26/01/2036	রাহু	26/01/2052	বৃহ	26/01/2071

বুধ 17 বর্ষ		কেতু 7 বর্ষ		শুক্র 20 বর্ষ		রবি 6 বর্ষ		চং 10 বর্ষ	
<b>26/01/2071</b>		<b>26/01/2088</b>		<b>26/01/2095</b>		<b>27/01/2115</b>		<b>27/01/2121</b>	
<b>26/01/2088</b>		<b>26/01/2095</b>		<b>27/01/2115</b>		<b>27/01/2121</b>		<b>00/00/0000</b>	
বুধ	24/06/2073	কেতু	23/06/2088	শুক্র	28/05/2098	রবি	17/05/2115	চং	26/07/2121
কেতু	21/06/2074	শুক্র	24/08/2089	রবি	28/05/2099	চং	15/11/2115		00/00/0000
শুক্র	21/04/2077	রবি	29/12/2089	চং	27/01/2101	মং	22/03/2116		00/00/0000
রবি	25/02/2078	চং	31/07/2090	মং	29/03/2102	রাহু	14/02/2117		00/00/0000
চং	28/07/2079	মং	27/12/2090	রাহু	28/03/2105	বৃহ	03/12/2117		00/00/0000
মং	24/07/2080	রাহু	14/01/2092	বৃহ	27/11/2107	শনি	15/11/2118		00/00/0000
রাহু	10/02/2083	বৃহ	20/12/2092	শনি	27/01/2111	বুধ	22/09/2119		00/00/0000
বৃহ	18/05/2085	শনি	29/01/2094	বুধ	27/11/2113	কেতু	27/01/2120		00/00/0000
শনি	26/01/2088	বুধ	26/01/2095	কেতু	27/01/2115	শুক্র	27/01/2121		00/00/0000

- ❖ উপরোক্ত দশা চন্দ্রের অংশ আধারিত। ভয়াত ভভোগ আধারিত দশা ভোগ্যকাল চং ৯ ব ৬ মা ৪ দি হয়।
- ❖ উপরোক্ত তিথি দশা সমাপ্তির সময়। বিংশোত্তরী দশা পুরো ১২০ বর্ষের বর্গিত, আয়ুনির্গয় ব্যতীত।

## বিংশোত্তরী দশা - প্রত্যন্তর

রাহু - বুধ		রাহু - কেতু		রাহু - শুক্র		রাহু - রবি		রাহু - চং	
<b>08/01/2026</b>		<b>27/07/2028</b>		<b>14/08/2029</b>		<b>14/08/2032</b>		<b>09/07/2033</b>	
<b>27/07/2028</b>		<b>14/08/2029</b>		<b>14/08/2032</b>		<b>09/07/2033</b>		<b>08/01/2035</b>	
বুধ	20/05/2026	কেতু	18/08/2028	শুক্র	13/02/2030	রবি	31/08/2032	চং	24/08/2033
কেতু	13/07/2026	শুক্র	21/10/2028	রবি	09/04/2030	চং	27/09/2032	মং	25/09/2033
শুক্র	15/12/2026	রবি	09/11/2028	চং	09/07/2030	মং	16/10/2032	রাহু	16/12/2033
রবি	31/01/2027	চং	11/12/2028	মং	11/09/2030	রাহু	05/12/2032	বৃহ	27/02/2034
চং	18/04/2027	মং	03/01/2029	রাহু	22/02/2031	বৃহ	17/01/2033	শনি	25/05/2034
মং	12/06/2027	রাহু	01/03/2029	বৃহ	19/07/2031	শনি	10/03/2033	বুধ	10/08/2034
রাহু	29/10/2027	বৃহ	21/04/2029	শনি	08/01/2032	বুধ	26/04/2033	কেতু	11/09/2034
বৃহ	02/03/2028	শনি	21/06/2029	বুধ	11/06/2032	কেতু	15/05/2033	শুক্র	11/12/2034
শনি	27/07/2028	বুধ	14/08/2029	কেতু	14/08/2032	শুক্র	09/07/2033	রবি	08/01/2035
রাহু - মং		বৃহ - বৃহ		বৃহ - শনি		বৃহ - বুধ		বৃহ - কেতু	
<b>08/01/2035</b>		<b>26/01/2036</b>		<b>16/03/2038</b>		<b>26/09/2040</b>		<b>02/01/2043</b>	
<b>26/01/2036</b>		<b>16/03/2038</b>		<b>26/09/2040</b>		<b>02/01/2043</b>		<b>09/12/2043</b>	
মং	30/01/2035	বৃহ	09/05/2036	শনি	09/08/2038	বুধ	21/01/2041	কেতু	22/01/2043
রাহু	29/03/2035	শনি	10/09/2036	বুধ	18/12/2038	কেতু	10/03/2041	শুক্র	19/03/2043
বৃহ	19/05/2035	বুধ	29/12/2036	কেতু	10/02/2039	শুক্র	26/07/2041	রবি	06/04/2043
শনি	19/07/2035	কেতু	12/02/2037	শুক্র	14/07/2039	রবি	06/09/2041	চং	04/05/2043
বুধ	11/09/2035	শুক্র	22/06/2037	রবি	30/08/2039	চং	14/11/2041	মং	24/05/2043
কেতু	03/10/2035	রবি	31/07/2037	চং	15/11/2039	মং	01/01/2042	রাহু	14/07/2043
শুক্র	06/12/2035	চং	04/10/2037	মং	08/01/2040	রাহু	05/05/2042	বৃহ	28/08/2043
রবি	25/12/2035	মং	19/11/2037	রাহু	25/05/2040	বৃহ	24/08/2042	শনি	21/10/2043
চং	26/01/2036	রাহু	16/03/2038	বৃহ	26/09/2040	শনি	02/01/2043	বুধ	09/12/2043
বৃহ - শুক্র		বৃহ - রবি		বৃহ - চং		বৃহ - মং		বৃহ - রাহু	
<b>09/12/2043</b>		<b>09/08/2046</b>		<b>28/05/2047</b>		<b>26/09/2048</b>		<b>02/09/2049</b>	
<b>09/08/2046</b>		<b>28/05/2047</b>		<b>26/09/2048</b>		<b>02/09/2049</b>		<b>26/01/2052</b>	
শুক্র	19/05/2044	রবি	23/08/2046	চং	07/07/2047	মং	16/10/2048	রাহু	11/01/2050
রবি	07/07/2044	চং	17/09/2046	মং	05/08/2047	রাহু	06/12/2048	বৃহ	08/05/2050
চং	26/09/2044	মং	04/10/2046	রাহু	17/10/2047	বৃহ	20/01/2049	শনি	24/09/2050
মং	22/11/2044	রাহু	16/11/2046	বৃহ	21/12/2047	শনি	15/03/2049	বুধ	26/01/2051
রাহু	17/04/2045	বৃহ	25/12/2046	শনি	07/03/2048	বুধ	03/05/2049	কেতু	18/03/2051
বৃহ	25/08/2045	শনি	10/02/2047	বুধ	15/05/2048	কেতু	22/05/2049	শুক্র	11/08/2051
শনি	26/01/2046	বুধ	23/03/2047	কেতু	12/06/2048	শুক্র	18/07/2049	রবি	24/09/2051
বুধ	13/06/2046	কেতু	09/04/2047	শুক্র	02/09/2048	রবি	04/08/2049	চং	06/12/2051
কেতু	09/08/2046	শুক্র	28/05/2047	রবি	26/09/2048	চং	02/09/2049	মং	26/01/2052

## শুভাশুভ জ্ঞান

শুভাশুভজ্ঞান আপনাকে নিজের মিত্র এবং শত্রু সম্বন্ধে সজাগ করায়। মূলাক্ষ, ভাগ্যাক্ষ এবং মিত্রাঙ্কর সহিত মিত্রতা এবং অংশীদারি করলে লাভ তথা সহযোগ প্রাপ্তি হবে। শুভ দিন এবং বর্ষ উন্নতি কারক তথা শুভ গ্রহের দশা লাভদায়ক। সেরূপ মিত্রলগ্ন এবং মিত্ররাশির ঘনিষ্ঠতা লাভদায়ক।

শুভরত্ন, শুভ ধাতু এবং শুভ রং ধারণ করলে শারীরিক এবং মানসিক সুস্থতা থাকে, ভাগ্য রত্ন ধারণ করলে সৌভাগ্য বৃদ্ধি হয়। শুভ সময়ে কার্য প্রারম্ভ করলে সফলতা প্রাপ্তি হয়। সাথে-সাথে ইন্টদেবের ধ্যান এবং জপ মানসিক শান্তি তথা সফলতা প্রদান করে। শুভ পদার্থ-অন্ন, দ্রব্য ইত্যাদির দান অথবা ব্যবসায় শুভ দিকে শুরু করলে বাঞ্ছিত ফললাভ প্রাপ্ত হয়। এইরূপ শুভাশুভজ্ঞানের দৈনন্দিন জীবনে প্রয়োগ শুভফলদায়ক।

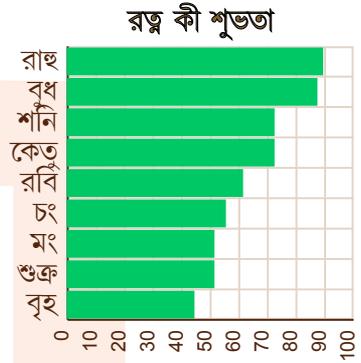
মূলাক্ষ	7
ভাগ্যাক্ষ	8
মিত্র অক্ষ	2, 3, 6, 7, 8
শত্রু অক্ষ	4, 5,
শুভ বর্ষ	25,34,43,52,61
শুভ দিন	শনি, বুধ, শুক্র
শুভ গ্রহ	শনি, বুধ, শুক্র
মিত্র রাশি	বৃষ, মিথুন
মিত্র লগ্ন	মকর, মিথুন, সিংহ
অনুকূল দেবতা	গণেশ
শুভ রত্ন	হীরা
শুভ উপরত্ন	জারকন, সোনালী হকীক
ভাগ্য রত্ন	পান্না
শুভ ধাতু	রৌপ্য
শুভ রং	রজত
শুভ দিক্	দক্ষিণপূর্ব
শুভ সময়	সূর্যোদয়
দান পদার্থ	মিশ্রি, দধি, শেবতচন্দন
দান অন্ন	চাউল
দান দ্রব্য	দুধ

## রত্ন চয়ন

রত্ন জীবন মেং শুভত্ব কী বৃদ্ধি কে লিএ ধারণ কিএ জাতে হৈং। বৈজ্ঞানিক রূপ সে, রত্ন অপনে গৃহ কী রাশিযোং কো পর্ণমাত্রা মেং মানব শরীর মেং প্রবাহিত কর গৃহ প্রভাব কী বৃদ্ধি করতে হৈং। যही कारण है कि रत্ন केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। गृह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की फति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नां में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत্ন चयन हेतु गृह की शुभता दशांते है।

नीचे जन्मकण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही केटोन सा गृह किस त्वे में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस गृह को ९५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसको रत্ন हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिसे ५०-९५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उमें कार्य त्वे अनूसार व अनकल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत্ন केवल २५-५० प्रतिशत शुभता लिए हैं उनको रत্ন केवल उनकी या उनको मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अस्तंतः जिसे २५ प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे गृह अपने लिए अशुभ ही समरों नर उनको रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत্ন	गृह	शुभता	क्षेत्र
गोमेद	राह	89%	भाग्योदय
पान्ना	बुध	87%	भाग्योदय, कम खरच
नीला	शनि	72%	दुर्घटना एड़ानो, सूख, सन्तति सूख
बैदूर्धमनि	केतु	72%	परक्रम, भाग्योदय
मागिक्य	रवि	61%	व्यवसायिक उन्नति, धनार्जन
मुञ्जा	चं	55%	कम खरच, व्यवसायिक उन्नति
प्रवाल	मं	51%	धन, दम्पति
हीरा	शुक्र	51%	दुर्घटना एड़ानो, स्वास्थ्य
पोखराज	बृह	44%	नेष्ट भाग्य, परक्रम हानि, शत्रु व रोग



### दशानुसार रत্ন विचार

दशा	समाप्ति	मागिक्य	मुञ्जा	प्रवाल	पान्ना	पोखराज	हीरा	नीला	गोमेद	बैदूर्धमनि
चं	26/01/2011	67%	67%	51%	93%	44%	51%	72%	77%	59%
मं	26/01/2018	67%	61%	64%	75%	53%	51%	72%	77%	78%
राह	26/01/2036	47%	34%	28%	87%	44%	57%	78%	100%	59%
बृह	26/01/2052	67%	61%	58%	75%	59%	27%	72%	89%	72%
शनि	26/01/2071	47%	34%	28%	93%	44%	57%	84%	95%	59%
बुध	26/01/2088	67%	34%	51%	100%	44%	57%	72%	89%	72%
केतु	26/01/2095	47%	34%	58%	87%	44%	57%	59%	77%	84%
शुक्र	27/01/2115	47%	34%	51%	93%	44%	64%	78%	95%	78%
रवि	27/01/2121	73%	61%	58%	87%	53%	27%	59%	77%	59%

## সাড়েসাতী বিচার

শনির সাড়েসাতীর প্রভাব দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের সাহায্যে কমানো সম্ভব। রত্ন পরিধান করার পূর্বে দুধ ও গঙ্গাজলে পরিষ্কার করে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে। শনি দ্বাদশ, প্রথম এবং দ্বিতীয় স্থান অতিক্রম করলে তবেই কোন জন্মকুণ্ডলীতে সাড়েসাতীর প্রভাব পরিলক্ষিত হয়। শনি নাটাল চন্দ্রের চতুর্থ ও অষ্টম স্থান অতিক্রম করার ফলে ঠেয়ার প্রভাব দেখা যায়। সাড়েসাতীর প্রভাব বিদ্যমান হয় সাড়ে সাত বছর এবং ঠেয়ার প্রভাব বিদ্যমান হয় আড়াই বছর। সাধারণতঃ এটি শরীর, মানসিক শাস্তি এবং অর্থনৈতিক অবস্থা বিঘ্নিত করে।

সাধারণতঃ সাড়েসাতী যে কোনো জন্মকুণ্ডলী তিনবার পরিভ্রমণ করে প্রথম-বাল্যকালে দ্বিতীয়-যৌবনকালে তৃতীয় - বৃদ্ধ বয়সে, প্রথম সাড়েসাতী শিক্ষা ও পিতা মাতাকে প্রভাবিত করে। দ্বিতীয় সাড়েসাতী জীবিকা অর্থ এবং পারিবারকে প্রভাবিত করে। শেষ সাড়েসাতী স্বাস্থ্যকে প্রভাবিত করে।

নিম্ন লিখিত সারণীতে সাড়েসাতীর পর্যায় এবং তার প্রভাব বর্ণিত হল।

### প্রথম চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

### দ্বিতীয় চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----

### তৃতীয় চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089

### শনির ঠেয়া ফল

ঠেয়ার প্রকার	ফল	ক্ষেত্র
সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	সম	অল্প সঞ্চয়
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	অশুভ	কম খরচ
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	শুভ	স্বাস্থ্য
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	শুভ	পরাক্রম
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	সম	দাম্পত্য কলহ

## সাড়েসাতীর উপায়

দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের মাধ্যমে সাড়েসাতির প্রভাব সীমিত করা সম্ভব। দান সামগ্রীর মধ্যে কালো বস্ত্র কালো কলাই, চামড়ার জুতো, শস্য দানা ইত্যাদি উল্লেখযোগ্য। শনিবার অনাহার করে শনির পূজা করা উচিত এবং পরে গম, গমের আটা, ফল, কালো নুন, কালো কলাই ইত্যাদি আহার করা উচিত। শনিবার নিজে অথবা ব্রাহ্মণের মাধ্যমে ১৯০০০ বার।

**ॐ প্রাং প্রং প্রৌং সঃ শনৈশ্চরায় নমঃ ।।**

মন্ত্র, উচ্চারণ করা দরকার স্বাস্থ্য মানসিক শান্তি, পরিবারের সুখ, অর্থ এবং জীবিকার উপর সাড়েসাতির শুভপ্রভাব লাভের জন্য মহামৃত্যুঞ্জয় মন্ত্র উচ্চারণ করলে সুফল পাওয়া যেতে পারে। ১২৫০০০ বার এই মন্ত্রটি উচ্চারণ করতে হবে।

**ॐ ত্রযংবকম যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্ধনম্।**

**উবার্গকমিব বন্ধনাম্মৃত্যোর্মুক্তীয় মা মৃতাত।।**

রত্ন পরিধানের পূর্বে এটি দুধ এবং গঙ্গাজলে ধুয়ে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে।

**ॐ হোং জুং স ॐ ভূর্ভুব স্ব ॐ।।**

শনির সাড়েসাতীর শুভত্ব যাড়ানোর জন্য শনি যারের দিন আপনি ঘোড়ার নাল বা নৌকার পেরেক দিয়ে তৈরী লোহার আংটা ধারণ করুন। আপনি নীলা বস্ত্র যাহিষ্কার করুন, কারণ শনি আপনার ঠিকুজীতে যোগকারক গ্রহ নয়। লোহার আংটা ডানহাতে মধ্যমা আঙুলে ধারণ করুন।

শনিবার শুক্ল পক্ষে সূর্যোৎস-র পূর্বে রত্ন পরিধানের শুভ সময়। এদিন পুষ-্যা, অনুরাধা, উত্তরা ভাদ্রপদ নক্ষত্র গুলি শুভ। শনিবার উপোস থাকা জরুরি।

**ॐ শং শনৈশ্চরায় নম ।**

অঙ্গুষ্ঠী ধারণ করলে শনির বস্ত্র দান করা উচিত। শনির অশুভ প্রভাব কম হবে তথা আপনার সুখ শান্তি এবং সমৃদ্ধি বৃদ্ধি হবে। ডড্রডশডড্রডশশ্রী হনুমান চালীসা এবং শ্রী হনুমান অষ্টক পাঠ করা শ্রেষ্ঠ।

## ईर्ष्या-कृष्ण

जब वर या कन्या की कुंडली में मङ्गल लग्ना, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो माङ्गलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**

**कृष्णभर्तृर्विनाशनी विनाशनम्।।**

यदि जातक जातिकार कृष्णते मङ्गल गृह चतुर्थ घर, सप्तम घर, अष्टम घर वा द्वादश घरे स्थित হয় তবে এটাকে মাঙ্গলিক দোষ বলা হয়। মঙ্গল চন্দ্রের সংগে যুক্ত হয়ে প্রবল হয়। যদি শাস্ত্রানুসারে জাতক ও জাতিকা মাঙ্গলিক দোষমুক্ত হয় তবে তারা সুখে নিশ্চিন্তে বৈবাহিক জীবন যাপন করবেন। অন্যদিকে যদি তারা এই দোষমুক্ত না হয় তবে তারা অযথা বাধা ও সমস্যার সম্মুখীন হয়। সুতরাং পুরুষ ও মহিলা উভয়েরই বৈবাহিক জীবন শুরু করার পূর্বে উভয়ের কৃষ্ণকে ভাল ভাবে বিচার করা উচিত। মাঙ্গলিক দোষ ভালভাবে মুক্ত করার পরে তারা শান্তিপূর্ণ বৈবাহিক জীবন যাপন করতে পারবেন।

\*\*\*\*\*

আপনার জন্মের সময় আপনার কোষ্ঠিতে মঙ্গল দ্বিতীয়ঘরে অবস্থান করেছে যেটা বাচনভঙ্গী এবং পরিবারকে প্রতিনিধিত্ব করছে সুতরাং মঙ্গলের প্রভাবে পরিবারের মধ্যে ঝামেলা হতে পারে। দক্ষিণ ভারতে এটা কুজ দোষ নামে পরিচিত। এর ফলস্বরূপ আপনার বাচনভঙ্গী খুব মধুর এবং আশে পাশের লোকেরা এর দ্বারা প্রভাবিত হয় এবং এই স্থানটি আর্থিক লাভের জন্য তুলনাবিহীন এবং আপনি প্রচুর বিলাসিতা এবং অর্থ পরিশ্রমের দ্বারা উপার্জন করবেন। আপনার পরিবার আপনার উপরে সন্তুষ্ট থাকবে।

**মঙ্গল দ্বিতীয় ঘরে অবস্থানে আপনার জন্মস্থান**

নির্দেশ করছে। তারা আপনাকে সহযোগিতা করছে কিন্তু আপনার সন্তান জন্মাতে দেরী হবে। আপনি উচ্চ শিক্ষা অর্জনে সক্ষম হবেন। মঙ্গলের অষ্টম ঘরে প্রবেশের দরুন অত্যধিক উত্তেজনার অসুখে কষ্ট পাবেন কিন্তু এটা আপনাকে বেশী ক্ষতি করতে পারবে না। অধিকাংশ কাজই আপনার এই বছরে সমাপ্ত হবে। মঙ্গল নবমঘরে প্রবেশের জন্য আপনার পরিশ্রম ও চেষ্টার দ্বারা আপনি সফলতা অর্জন করবেন। আপনার ভাগ্যের তুলনায় আপনি কর্মের উপর খুব আস্থা সম্পন্ন ব্যক্তি হবেন।

মঙ্গলের দ্বিতীয় ঘরে প্রবেশের জন্য আপনি সুখী পারিবারিক জীবন অতিবাহিত করবেন। আপনি সুখী পারিবারিক অভাব ও সমস্যাকে ভালভাবে দেখাশুনা করবেন। তারা অবশ্যই সম্পূর্ণ সমর্থন করবেন এবং আপনাকে সহযোগিতা করবেন। আপনার জীবন সুখকর করার জন্য আপনার অবশ্যই মাঙ্গলিক বিহীন পুরুষকে বিবাহ করা উচিত। আপনি সুখী দাম্পত্য জীবন অতিবাহিত করবেন।

## কালসর্প যোগ

অগ্নে রাহুরথ কেতু সর্বে মধ্যগতা গৃহা।  
যোগা যং কালসর্পাখ্যো শীঘ্রং তং তু বিনাশয।।

রাহু এবং কেতু গৃহের মধ্যে বাকি সমস্ত সাত গৃহ বিদ্যমান থাকলে, কালসর্প যোগ গঠিত হয়। এই কালসর্প যোগের অশুভ ফল থেকে মুক্তি পেতে এর নিবারণ করা অত্যন্ত জরুরী।

কুন্ডলীর দ্বাদশ ভাবে রাহুর উপস্থিতি অনুযায়ী প্রধানত দ্বাদশ প্রকার কালসর্প যোগ গঠিত হয়-  
৩. আলুকি ৪. কুন্ডলিকা ৫. পদ্ম ৬. মহাপদ্ম ৭. তক্ষক ৮. ককোটিক ৯. শংখচূড় ১০.  
ঘাতক ১১. বিষধর ১২. শেযনাগ।

কালসর্প যোগ উদিত এবং অনুদিত দুই প্রকারের হয়। রাহুর সামনে/মুখে সমস্ত সাত গৃহ গৃহিত থাকলে তাহা উদিত গোলার্ধ যোগ তৈরী করে এবং রাহুর পশ্চাৎ দিক থেকে যদি সাত গৃহ স্থাপিত হয় তা অনুদিত গোলার্ধ নামক যোগ তৈরী করে। যদি রাহু ও কেতুর মধ্যে স্থিত গৃহে কিছু গৃহ রাহু-কেতুর অক্ষে সামান্য বাইরে থাকে তা আংশিক কালসর্প যোগ হিসাবে পরিগণিত হয়।

এই যোগে উৎপন্ন জাতক মানসিক অশান্তি, ধনপ্রাপ্তিতে বাধা, সন্তান জন্মে অবরোধ এবং গৃহস্থ জীবনের প্রতিমুহূর্তে অশান্তির সম্মুখীন হয়। জাতক প্রায়ই দুঃস্বপ্ন দেখে। কিছু না কিছু অশুভ ঘটনার আশঙ্কা মনের মধ্যে থাকে। নিজস্ব ক্ষমতা ও কার্য কুশলতার পূর্ণ ফল প্রাপ্ত করে না অথবা দেরীতে সফলতা প্রাপ্ত করে। এই যোগে হঠাৎ লোকসান বা প্রতিষ্ঠা হানির সম্মুখীন হয়। কালসর্প যোগের বিধিবৎ উপচারের দ্বারা এরূপ কষ্ট থেকে মুক্তি পাওয়া সম্ভব।

### জাতক পর কালসর্প যোগের প্রভাব

আপনার জন্মকুন্ডলীতে কালসর্পযোগ না থাকায় এটির জন্য শান্তি ইত্যাদির আবশ্যিকতা নেই এবং আপনি সম্পূর্ণ সুখী জীবনযাপন করবেন।







## ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में ई० औरुं के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ह्यनु ॐ कव

### शुक्र

ककर्टराशिर दशमस्थाने रविर उपस्थिति आपनाके कर्मठ व्यक्तिरूपे परिचित करे, आपनि बेसरकारी अधिकर्तादेर सूनजरे पडुबेन एवं ताँदेर काह थेके विशाल लाडवान हबेन। आपनार जनसंयोग क्षमता वा मिशुके स्वभावेर जन्य आपनि आपनार पेशाय लाड, प्रतिपत्ति, ओ सम्मान अर्जन करते पारेन। केडु यदि आपनाके मामला मोकदमाय जडान तबे तिनि हताश हबेन एवं दुःख प्रकाशओ करबेन, आपनि क्षतिगुस्त हबेन ना वरं किछु डालो परिमान अर्थलाडओ हते पारे।

आपनार जन्मेर समय सूर्य दशमस्थाने अवस्थान कराय आपनार पितार स्वास्थ्य स्वाभाविक थाकबे तबे कोन समये शारीरिक दुर्बलता अनुभव करते पारेन। आपनि उतुतराधिकार सूत्रे पैतृक सम्पत्ति लाड करबेन एवं कर्मजीवने आपनार पितार सहायताय साफल्य पारेन।

आपनि पितাকে सम्मान ओ डक्ति करबेन। आपनादेर मध्ये कोन व्यापारे मतपार्थक्य देखा दिलेओ ता क्षणस्थायी हबे एवं एके अपरेर प्रति डग्यवान बले विवेचित हबेन।

### चन्द्र

आपनि सर्वदा पितामातार काहे थाकबेन एवं तादेर जन्य प्रचुर खरच करबेन। वास्तविक आपनि एकजन कर्तव्यपरायन व्यक्तिरूपे परिचित हबेन। आपनि एछाडाओ व्ययसापेक्ष ड्रमन करबेन। ये कारने आपनि टाका पयसा जमाते सम्म हबेन ना।

व्यवसागत कारने आपनि निजेर देश वा बाहिरेओ येते पारेन। यदिओ एहि ड्रमण काजेर जन्य हबे, तबे समय पेले आपनि एटिके निजेर आनन्देर सङ्गे युक्त करबेन।

कन्याराशिर द्वादशस्थाने चन्द्रेर उपस्थिति आपनार वाँ चोखेर समस्याय डोगाते पारे या खुब माराडक हबे ना।

आपनार जन्मेर समय चन्द्र द्वादशस्थाने अवस्थान कराय आपनार मायेर स्वास्थ्य डाल याबे। माणे मध्ये तिनि शारीरिक यन्त्रनाय कण्ट पेते पारेन। तिनि आपनाके डालवासबेन एवं आपनार पक्ष नेबेन। एछाडा तिनि आपनाके विडिन धर्मीय ओ दातव्य काजे अनुप्राणित करबेन।

आपनि आपनार माके श्रद्धा ओ डक्ति करबेन। किन्तु एके अपरके सब विषये मानिये चलते पारबेन ना। तबे आपनादेर मतपार्थक्य दीर्घस्थायी हबे ना। आपनि माके सुखे शान्तिते राखार चेण्टा करबेन।

### मङ्गल

वृश्चिकराशिर द्वितीयस्थाने मङ्गलेर अवस्थान निज कठोर परिश्रमेर माध्यमे उन्नतिर इंगित देय। योथ वा व्यवसायिक अंशीदारेर माध्यमे जीवनेर प्रथम दिके डीयन लोकसाने इंगित रयेछे। यदि ओ कथनो सखनो विद्यता आसबे, तबुओ गार्हस्थ्य जीवन सुखमय हबे। मारवयस थेके आपनि अर्थ उपार्जन करबेन एवं डविष्यतेर प्रयोजने अर्थ जमाबेन। पैतृकसम्पत्तिर माध्यमे किछु उपकृत हते पारेन।

এই শিশুটির জন্ম সময়ে মঙ্গল ছিল দ্বিতীয় ঘরে যা আভাস দেয় যে তার ভাই বোনদের স্বাস্থ্য ঠিক থাকবে। কিন্তু মাঝে মধ্যে তারা অসুস্থ ও দুর্বলতা অনুভব করবে। তারা তাকে সম্ভাব্য সকল উপায়ে সাহায্য ও সহযোগিতা করবে।

সে তাদের ভালোবাসবে এবং তারা মিলেমিশে থাকবে। কিন্তু তাদের মধ্যে মাঝে মাঝে বিবাদ এবং মতের অমিল হবে। এই মানসিক উদ্বেগ বেশীক্ষণ সহ্যী হবে না এবং নিষ্ঠার সঙ্গে সে তাদের দেখাশোনা করবে।

## বুধ

নবমস্থানে বুধের অবস্থান আপনাকে আভ্যন্তরীণ কার্যে সফল করবে এবং বহিঃ সম্পর্কেও আপনাকে লাভবান করবেন। আপনার ভাগ্য জীবনের সবদিক থেকে সফলতা এনে দেবে। আপনি লক্ষ্যে পৌঁছানোর জন্য অসম্ভাব্য পরিশ্রম ও মধ্যস্থিতিক্রমে আপনাদের লু অধিকারী করবে।

আপনি নিজ ধর্মস্থান, পুণ্যস্থান এবং অন্য ধর্মস্থানেও ভ্রমণে আগ্রহী হবেন। দূরভ্রমণের লক্ষণ দেখা যায়। এই ভ্রমণের থেকে আপনি টাকা পয়সা নাম, যশ এবং উন্নতি লাভ করবেন। আপনি প্রচুর সেবামূলক কার্য করবেন।

## বৃহস্পতি

বৃহস্পতির উপস্থিতির দরুন আপনার শত্রুদের দিক থেকে নানান সমস্যা আসতে পারে। আপনি উন্নতির পথে কিছু বাধার সম্মুখীন হতে পারেন।

আপনি আত্মবিশ্বাসী হবেন। আপনার মনে হতে পারে যে আপনার ভাগ্য আপনাকে সহায়তা করছেনা। যেহেতু আপনি আপনার লক্ষ্যের দিকে পৌঁছানোর জন্য ধার্মিক অনুষ্ঠান করেন, সেজন্য আপনার পূজা অর্চনার কার্যে বাধা আসতে পারে।

তুলালগ্নের উপস্থিতির ফলে দীর্ঘভ্রমণের লক্ষণ দেখা যায় যা আপনার পক্ষে খুবই লাভজনক কিন্তু বৃহস্পতির প্রভাবের ফলে দূরভ্রমণ থাকলেও আপনি তার থেকে উচিৎ লাভ পাবেন না।

## শুক্র

বৃষরাশির অষ্টমস্থানে শুক্রের উপস্থিতি আপনাকে জ্যোতিষবিদ্যার মনঃস্তাত্ত্বিক বিশ্লেষণের প্রতি আকৃষ্ট করবে। আপনার কিছু মনঃস্তাত্ত্বিক এবং আধ্যাত্মিক অভিজ্ঞতা আপনার আগ্রহ এ বিষয়ে আরো বাড়িয়ে দেবে। পূর্বপুরুষের সম্পত্তি এবং মৃতব্যক্তির সম্পত্তি লাভের সম্ভাবনা আছে। বিবাহসূত্রে সম্পত্তি লাভ হবে। এটা পরিষ্কার যে আপনার ভূ-সম্পত্তির পরিমাণ বাড়বে।

বিবাহের সময় যথেষ্ট পন পাবেন। আপনার শ্যালকরা আপনাদের বিবাহে সন্তুষ্ট হয়ে আপনাদের খুশী করবে।

আপনি বীমার দ্বারা লাভ করতে পারেন, যার দ্বারা আপনার সুখস্বাচ্ছন্দ্যে নতুনমাত্রা যোগ হবে। চুরি ডাকাতির সম্ভাবনা নেই তবুও অযথা ঝুঁকি নেবেন না।

দুর্ঘটনার সম্ভাবনা নেই এবং যদিও কোথাও এক আধবার দুর্ঘটনায় পড়েন আপনি বিনা আঘাতে বেঁচে যাবেন।

আপনি দীর্ঘায়ু হবেন এবং আপনার মৃত্যু দীর্ঘ রোগ ভোগের দরুন হতে পারে।

## শনি

বৃষাশির অষ্টমস্থানে শনির অবস্থিতির ফলে আপনি জ্যোতিষবিদ্যার প্রতি সামান্যতমও আগ্রহের লক্ষণ দেখাবেন না। আপনি এতটা সমস্যা জর্জরিত থাকবেন যে আপনার বন্ধুবান্ধব এবং কারো প্ররোচনাতেও আপনি জ্যোতিষবিদ্যা চর্চায় সামান্য সময়টুকুও দিতে পারবেন না। জ্যোতিষবিদ্যা চর্চায় আপনার জন্মগত কোন প্রতিভা থাকবে না। শনির প্রভাব এতোটা বেশী যে তা তুলালগ্নের বিপরীত প্রভাবকে ছাপিয়ে যাবে।

পূর্বপুরুষের সম্পত্তি ক্ষতিগ্ণস্ত হবে। আপনি কিছু সম্পত্তি পেতে পারেন কিন্তু তা আপনাকে সন্তুষ্ট করবে না। চুরি ছিনতাইয়ের লক্ষণ আছে, তাই আপনাকে বীমা করার পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে।

দুর্ঘটনার সম্ভাবনাকে এড়াতে পারবেন না। কিন্তু বিপদের সম্ভাবনা নেই। আপনি দীর্ঘায়ু হবেন যতদূর সম্ভব প্যারালিসিস্ রোগে আপনার মৃত্যু হতে পারে।

## রাহু

নবমস্থানে রাহুর অবস্থানের জন্য আপনি নানা বাধা বিপত্তির সম্মুখীন হবেন তবে ঐর্ষ্যের মাধ্যমে এগুলির সমাধানে সক্ষম হবেন।

যদিও আপনি কঠোর পরিশ্রমী হবেন তবু নিজের উন্নতির জন্য আপনি গোপনপথ অবলম্বন করবেন। আপনি বড় কোন পরিকল্পনা করবেন যা কার্যকরী হবে না। আপনি আর্থিক দিককে অত্যন্ত গুরুত্ব দেন।

## কেতু

ধনুশির তৃতীয়স্থানে কেতুর অবস্থানের ফলে ইংগিত করে যে আপনার মানসিক ক্ষমতা প্রবল। আপনি কূটনীতিক এবং গোপনীয়তা রাখেন, যা আপনাকে সফল করে।

আপনার সহোদর এবং জ্ঞাতি ভাই-বোন আপনার সহযোগীতা করবে। সংগীত আপনাকে আকৃষ্ট করে এবং আপনার আনন্দলাভের জন্য গান, সিনেমা, সংগীত ও থিয়েটার ভালো লাগে।

# দশা বিশ্লেষণ

মহাদশা :- রাহু  
( 26/01/2018 - 26/01/2036 )

রাহুর মহাদশা ২৬/০১/২০১৮ আরম্ভ ও ২৬/০১/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই দশা ১৮ বছরের। আপনার জন্মকুন্ডলীতে রাহু নবম ভাবে স্থিত। রাহুর তৃতীয় ভাবে দৃষ্টি আছে। এর পূর্বে আপনার ৭ বছরের মঙ্গলদশা চলছিল। মঙ্গলের কারণে আপনার যাত্রা, ব্যয়, কিছু আর্থিক লাভ, উত্তম শিক্ষা ও সম্পত্তি প্রাপ্তি হয়ে থাকবে। রাহুর এই দশায় আপনার সম্পত্তি ও সমৃদ্ধি লাভ হবে, সুদূর যাত্রা এবং আধ্যাত্মিকতার প্রতি আগ্রহ বাড়বে।

স্বাস্থ্য :

এই দশায় আপনার স্বাস্থ্য ভালো হবে। আপনি শক্তি ও সামর্থ্যবান হবেন। আপনার অধিক কার্য ও শ্রম করা অনুচিত, কারণ, এর কারণে আপনার শরীর দুর্বল হতে পারে। ঋতু পরিবর্তনের কারণে আপনার জ্বর, সংক্রামক রোগ, বীজাণু সংক্রমণ সমস্যা, চর্মরোগ, স্নায়বিক দুর্বলতা ও শারিরিক অঙ্গে দুর্বলতা ইত্যাদি অসুস্থতা হতে পারে। একটু সাবধান থাকলে এই সব রোগ থেকে বাচতে পারেন।

অর্থ ও ব্যবসায় :

এই দশায় আপনার আর্থিক স্থিতি সুদৃঢ় হবে। আপনি সক্রিয় এবং আর্থিক সুযোগের খোজে থাকবেন। আপনার ভৌতিক সমৃদ্ধি ও সমস্ত সুখ প্রাপ্ত হবে। আপনি শক্তি ও অধিকার লাভ করবেন। আপনি ফাটকা কাজে খুব লাভ পাবেন। তৃতীয় ভাবের উপর রাহুর দৃষ্টির ফলস্বরূপ আপনার ছোট ভাই-বোনদের থেকে লাভ পাবেন, যাত্রা ও ভ্রমণ হবে। জীবিকা ও ব্যবসায়ের জন্য টেকনিক্যাল বা বিজ্ঞানের ক্ষেত্র, কম্পিউটার-বিজ্ঞান, রাজনীতি, কূটনীতিক কার্য, অনুসন্ধান, সরকারী চাকুরি ইত্যাদি শুভ হবে। চামড়ার বস্ত্র, ওষুধ, রসায়ন, বৈদ্যুতিক উপকরণ, রত্ন, সোনা ইত্যাদির ব্যবসায়, লাভজনক হতে পারে। চাকুরীরতদের আয়বৃদ্ধি ও উন্নতি হবে। আপনার অকস্মাৎ পদোন্নতি হবে ও উচ্চপদস্থ কর্মচারীদের অনুগ্রহ প্রাপ্ত করবেন। ব্যবসায়ীদের ব্যয়, যাত্রা ও পরিবর্তন হতে পারে। কিন্তু এই সবকিছুই আপনার জন্য লাভদায়ক প্রমাণিত হবে। দশার অগ্রগতির সাথে সাথে পরিস্থিতির সুপরিবর্তন হবে।

অন্তর্দশা :

রাহুর মহাদশায় রাহুর অন্তর্দশার কারণে আপনার সুখ, সম্পত্তি, যাত্রা ও সমৃদ্ধি প্রাপ্তি হবে। গুরুর অন্তর্দশায় যশ, খ্যাতি, কার্যে সাফল্য ও জীবনে সুখ পাবেন। শনির অন্তর্দশার ফলস্বরূপ নিকট যাত্রা ও কিছু মামুলী বাধা হতে পারে। বুধের অন্তর্দশায় আপনার বিবাহ হবে, অংশীদারী থেকে লাভ ও জীবিকোপার্জনে সফলতা পাবেন। কেতুর অন্তর্দশার কারণে কিছু সমস্যা হতে পারে। শুক্রে অন্তর্দশার ফলস্বরূপ সর্বপ্রকার লাভ ও কিছু মামুলী স্বাস্থ্য সমস্যা হতে পারে। সূর্যের অন্তর্দশায় সম্পত্তি ও সমৃদ্ধি প্রাপ্তি, সুদূর যাত্রা ও আধ্যাত্মিক কার্যে রুচি বৃদ্ধি হবে। চন্দ্রের অন্তর্দশায় পরিবর্তন ও অকস্মাৎ লাভ বা হানি হতে পারে। মঙ্গলের অন্তর্দশায় সন্তান সুখ পাবেন।

অন্তর্দর্শা :- রাহু - শনি  
( 04/03/2023 - 08/01/2026 )

রাহুর মহাদশা ১৮ বছর। এই মহাদশা ২৬/০১/২০১৮ আরম্ভ হয়ে ২৬/০১/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় শনির অন্তর্দর্শা ভোগ্যকাল ২ বছর ১০ মাস ৬ দিন। আপনার এই অন্তর্দর্শা ০৪/০৩/২০২৩ আরম্ভ হয়ে ০৮/০১/২০২৬ সমাপ্ত হবে।

শনি আপনার জন্মপত্রিকায় অষ্টম ভাবে অবস্থিত। অষ্টম ভাব আয়ু, উত্তরাধিকার, দুর্ঘটনা, দুর্ভাগ্য, দুঃখ, চিন্তা, নিরাশা, ক্ষতি, বাধা, চুরি ও ডাকাতির প্রতিনিধি। অষ্টম ভাবে স্থিত শনি আপনার কুন্ডলীর ১০, ২, ৫ ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে। অষ্টম ভাব স্থিত শনি দীর্ঘায়ুর পরিচায়ক।

এই দশায় আপনি কর্মঠ হবেন। চোখের রোগে সাবধানতা অবলম্বন করুন। নিম্নস্তরের বিপরীত লিঙ্গের ব্যক্তি সঙ্গে মিত্রতা হতে পারে। স্বসন তন্ত্র রোগ হতে পারে।

অরিষ্ট দূরীকরণে রাপোয় ন-মুখী রুদ্রাক্ষ শনিবার দিন শিবের পূজা ও শনি বৈদিক মন্ত্র জপের পরে ধারণ করুন।

অন্তর্দর্শা :- রাহু - বুধ  
( 08/01/2026 - 27/07/2028 )

রাহু মহাদশা ১৮ বছর। আপনার জন্য এই মহাদশা ২৬/০১/২০১৮ আরম্ভ হয়ে ২৬/০১/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় বুধের অন্তর্দর্শা ২ বছর ৬ মাস ১৮ দিন। আপনার এই অন্তর্দর্শা ০৮/০১/২০২৬ আরম্ভ হয়ে ২৭/০৭/২০২৮ সমাপ্ত হবে।

বুধ আপনার জন্মপত্রিকায় নবম ভাবে অবস্থিত। নবম ভাব শ্রদ্ধা, ভাগ্য, ধার্মিক ও আধ্যাত্মিক বিচার, আত্মজ্ঞান, ভবিষ্যৎজ্ঞান, উপাসনাস্থল, পিতা, ধর্মগুরু, সুদূর যাত্রা, বিমান যাত্রা, উচ্চ শিক্ষা ও হাটুর পরিচায়ক। নবম ভাব স্থিত বুধ আপনার কুন্ডলীর তৃতীয় ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনি বিদ্বান ও বিজ্ঞানাদি বিভিন্ন বিষয়ে জ্ঞানার্জন করতে পারেন। বিভিন্ন শহরে এই বিষয়ে ব্যাখ্যা করার জন্য আমন্ত্রিত হতে পারেন। পিতা ও গুরুর সাথে আপনার সম্বন্ধ মধুর হবে।

শুভত্বকুঙ্কিমা জপিস্টরদূরীকরণে বুধের তান্দ্রিক মন্ত্র

অন্তর্দর্শা :- রাহু - কেতু  
( 27/07/2028 - 14/08/2029 )

রাহুর মহাদশা ১৮ বছর। আপনার জন্য এই মহাদশা ২৬/০১/২০১৮ আরম্ভ হয়ে ২৬/০১/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় কেতুর অন্তর্দর্শা ১ বছর ১৮ দিন। আপনার জন্য এই অন্তর্দর্শা ২৭/০৭/২০২৮ আরম্ভ হয়ে ১৪/০৮/২০২৯ সমাপ্ত হবে।

কেতু আপনার জন্মপত্রিকায় তৃতীয় ভাবে অবস্থিত। তৃতীয় ভাব মস্তিষ্কর ধারণা, বুদ্ধি, সাহস, ছোট্টে ভাই-বোন, নিকট যাত্রা, বিচার সন্চার, হাত, কাঁধ ইত্যাদির পরিচায়ক। তৃতীয় ভাব স্থিত কেতু

আপনার কুন্ডলীর নবম ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্রকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনার মস্তিষ্ক বিচলিত থাকতে পারেন এবং আপনার মতিভ্রম হওয়া সম্ভব। আপনি সাহসী, শত্রু বিজয়ী হবেন। এই অন্তর্দর্শা শুভ হওয়ার সম্ভাবনা বিদ্যমান।

অরিষ্ট দূরীকরণে শনিবার ও মঙ্গলবার উপবাস রাখুন। উপবাসের পরে হনুমানজীর উপাসনা করে মিষ্টি ভোজন গ্রহণ করুন। লবণ গ্রহণ করবেন না।

**অন্তর্দর্শা :- রাহু - শুক্র**  
**( 14/08/2029 - 14/08/2032 )**

রাহু মহাদশা ভোগ্যকাল ১৮ বছর। আপনার জন্য এই মহাদশা ২৬/০১/২০১৮ আরম্ভ হয়ে ২৬/০১/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় শুক্রের অন্তর্দর্শা ৩ বছর। আপনার জন্য এই অন্তর্দর্শা ১৪/০৮/২০২৯ আরম্ভ হয়ে ১৪/০৮/২০৩২ সমাপ্ত হবে।

শুক্র আপনার জন্মপত্রিকায় অষ্টম ভাবে অবস্থিত। অষ্টম ভাব আয়ু, উত্তরাধিকার, দুর্ঘটনা, দুর্ভাগ্য, দুঃখ, চিন্তা, নিরাশা, ক্ষতি, বাধা, চুরি ও ডাকাতির প্রতিনিধি। শুক্র শুভ গ্রহ। অষ্টম ভাব স্থিত শুক্র আপনার কুন্ডলীর দ্বিতীয় ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্রকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনি ধনী ও সুখী হবেন। মানসিক রূপে বিচলিত থাকতে পারেন। ছোট-ছোট কথায় দুঃখ পেতে পারেন। এই সম্বন্ধে পরিবর্তনের প্রয়াস করা আবশ্যিক।

অরিষ্ট দূরীকরণে ও শুভত্ব বৃদ্ধির জন্য শুক্র বৈদিক মন্ত্র ১৬০০০ বার জপ করুন।